रविवार 31 मई, 2020

विषय — प्राचीन और आधुनिक काला जादू,उपनाम कृत्रिम निद्रावस्था और हाइपोहान

स्वर्ण पाठ: याकूब 4 : 8

"परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा।"

उत्तरदायी अध्ययन: **I पतरस 2 : 1, 2, 9-12, 15**

1 इसलिये सब प्रकार का बैर भाव और छल और कपट और डाह और बदनामी को दूर करके।
2 नये जन्मे हुए बच्चों की नाईं निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ।
9 पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिये कि जिस ने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो।
10 तुम पहिले तो कुछ भी नहीं थे, पर अब परमेश्वर ही प्रजा हो॥
11 हे प्रियों मैं तुम से बिनती करता हूं, कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जान कर उस सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो।
12 अन्यजातियों में तुम्हारा चालचलन भला हो; इसलिये कि जिन जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जान कर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देख कर; उन्हीं के कारण कृपा दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें॥
15 क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम भले काम करने से निर्बुद्धि लोगों की अज्ञानता की बातों को बन्द कर दो।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. निर्गमन 20 : 1-3

1 तब परमेश्वर ने ये सब वचन कहे,
2 कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात मिस्र देश से निकाल लाया है॥
3 तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना॥

2. I शमूएल 28: 3-8, 11, 12 (*से* :), 14 (और शाऊल)-20 (*से* :)

3 शमूएल तो मर गया था, और समस्त इस्राएलियों ने उसके विषय छाती पीटी, और उसको उसके नगर रामा में मिट्टी दी थी। और शाऊल ने ओझों और भूतसिद्धि करने वालों को देश से निकाल दिया था॥
4 जब पलिश्ती इकट्ठे हुए और शूनेम में छावनी डाली, तो शाऊल ने सब इस्राएलियों को इकट्ठा किया, और उन्होंने गिलबो में छावनी डाली।
5 पलिश्तियों की सेना को देखकर शाऊल डर गया, और उसका मन अत्यन्त भयभीत हो कांप उठा।
6 और जब शाऊल ने यहोवा से पूछा, तब यहोवा ने न तो स्वप्न के द्वारा उस उत्तर दिया, और न ऊरीम के द्वारा, और न भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा।
7 तब शाऊल ने अपने कर्मचारियों से कहा, मेरे लिये किसी भूतसिद्धि करने वाली को ढूंढो, कि मैं उसके पास जा कर उस से पूछूं। उसके कर्मचारियों ने उस से कहा, एन्दोर में एक भूतसिद्धि करने वाली रहती है।
8 तब शाऊल ने अपना भेष बदला, और दूसरे कपड़े पहिनकर, दो मनुष्य संग ले कर, रातोंरात चलकर उस स्त्री के पास गया; और कहा, अपने सिद्धि भूत से मेरे लिये भावी कहलवा, और जिसका नाम मैं लूंगा उसे बुलवा दे।
11 स्त्री ने पूछा, मैं तेरे लिये किस को बुलाऊ? उसने कहा, शमूएल को मेरे लिये बुला।
12 जब स्त्री ने शमूएल को देखा, तब ऊंचे शब्द से चिल्लाई।
14 तब शाऊल ने निश्चय जानकर कि वह शमूएल है, औंधे मुंह भूमि पर गिर के दण्डवत किया।
15 शमूएल ने शाऊल से पूछा, तू ने मुझे ऊपर बुलवाकर क्यों सताया है? शाऊल ने कहा, मैं बड़े संकट में पड़ा हूं; क्योंकि पलिश्ती मेरे साथ लड़ रहे हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया, और अब मुझे न तो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उत्तर देता है, और न स्वपनों के; इसलिये मैं ने तुझे बुलाया कि तू मुझे जता दे कि मैं क्या करूं।
16 शमूएल ने कहा, जब यहोवा तुझे छोड़कर तेरा शत्रु बन गया, तब तू मुझ से क्यों पूछता है?
17 यहोवा ने तो जैसे मुझ से कहलावाया था वैसा ही उसने व्यवहार किया है; अर्थात उसने तेरे हाथ से राज्य छीनकर तेरे पड़ोसी दाऊद को दे दिया है।
18 तू ने जो यहोवा की बात न मानी, और न अमालेकियों को उसके भड़के हुए कोप के अनुसार दण्ड दिया था, इस कारण यहोवा ने तुझ से आज ऐसा बर्ताव किया।
19 फिर यहोवा तुझ समेत इस्राएलियों को पलिश्तियों के हाथ में कर देगा; और तू अपने बेटों समेत कल मेरे साथ होगा; और इस्राएली सेना को भी यहोवा पलिश्तियों के हाथ में कर देगा।
20 तब शाऊल तुरन्त मुंह के बल भूमि पर गिर पड़ा, और शमूएल की बातों के कारण अत्यन्त डर गया।

3. यशायाह 8: 19 (*से 1st*?)

19 जब लोग तुम से कहते हैं कि ओझाओं और टोन्हों के पास जा रहे हैं पूछो जो गुनगुनाते और फुसफुसाते हैं, तब तुम यह कहते हो कि क्या प्रजा को अपने भगवान ही के पास जा कर न पूछना चाहिए?

4. निर्गमन 20 : 5 (क्योंकि), 6

5 ...क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूं, और जो मुझ से बैर रखते है, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूं,
6 और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हजारों पर करूणा किया करता हूं॥

5. मत्ती 24: 1, 2 (*से 1st*,), 4 (सावधान)-7, 10-14 (*से* ;)

1 जब यीशु मन्दिर से निकलकर जा रहा था, तो उसके चेले उस को मन्दिर की रचना दिखाने के लिये उस के पास आए।
2 उस ने उन से कहा।
4 सावधान रहो! कोई तुम्हें न भरमाने पाए।
5 क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं मसीह हूं: और बहुतों को भरमाएंगे।
6 तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे; देखो घबरा न जाना क्योंकि इन का होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा।
7 क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह जगह अकाल पड़ेंगे, और भुईंडोल होंगे।
10 तब बहुतेरे ठोकर खाएंगे, और एक दूसरे से बैर रखेंगे।
11 और बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे।
12 और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जाएगा।
13 परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।
14 और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो॥

6. 2 थिस्सलुनीकियों 2 : 1-3 (*से 2nd* ,)

1 हेभाइयों, अब हम अपने प्रभु यीशु मसीह के आने, और उसके पास अपने इकट्ठे होने के विषय में तुम से बिनती करते हैं।

2 कि किसी आत्मा, या वचन, या पत्री के द्वारा जो कि मानों हमारी ओर से हो, यह समझ कर कि प्रभु का दिन आ पहुंचा है, तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए; और न तुम घबराओ।
3 किसी रीति से किसी के धोखे में न आना क्योंकि वह दिन न आएगा, जब तक धर्म का त्याग न हो ले।

7. 2 तीमुथियुस 3 : 1-5, 14-17

1 पर यह जान रख, कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएंगे।
2 क्योंकि मनुष्य अपस्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टालने वाले, कृतघ्न, अपवित्र।
3 दयारिहत, क्षमारिहत, दोष लगाने वाले, असंयमी, कठोर, भले के बैरी।
4 विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और परमेश्वर के नहीं वरन सुखविलास ही के चाहने वाले होंगे।
5 वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उस की शक्ति को न मानेंगे; ऐसों से परे रहना।
14 पर तू इन बातों पर जो तू ने सीखीं हैं और प्रतीति की थी, यह जानकर दृढ़ बना रह; कि तू ने उन्हें किन लोगों से सीखा था
15 और बालकपन से पवित्र शास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिये बुद्धिमान बना सकता है।
16 हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है।
17 ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 102 : 9-11

लेकिन आत्मा का एक वास्तविक आकर्षण है। ध्रुव को सुई की ओर इशारा करना इस सर्व-शक्तिमान या ईश्वर, दिव्य मन के आकर्षण का प्रतीक है।

2. 213 : 11-15

अच्छाई की ओर हर कदम भौतिकता से प्रस्थान है, और ईश्वर, आत्मा की ओर एक प्रवृत्ति है। भौतिक सिद्धांतों ने आंशिक रूप से परिमित, अस्थायी और कलह के प्रति एक विपरीत आकर्षण द्वारा अनंत और शाश्वत भलाई के प्रति इस आकर्षण को पंगु बना दिया।

3. 536 : 11-29

यदि मनुष्य का आध्यात्मिक गौरव और आकर्षण एक पिता के प्रति, जिसमें हम "जीवित रहते हैं, और चलते-फिरते हैं, और स्थिर रहते हैं", खो जाना चाहिए, और यदि मनुष्य को ईश्वरीय सिद्धांत के बजाय निपुणता से शासित होना चाहिए, बजाय शरीर के आत्मा, मनुष्य नष्ट हो जाएगा। आत्मा के बजाय मांस से बनाया गया, भगवान की बजाय सामग्री से शुरू होता है, नश्वर मनुष्य स्वयं द्वारा शासित होता है। अगर अंधा अंधे को राह दिखाएगा, तो दोनों गिर जाएंगे।

जुनून और भूख को दर्द में समाप्त होना चाहिए। वे "कुछ दिनों के हैं, और परेशानी से भरे हुए हैं।" उनकी अस्थायी खुशी धोखा है। उनकी संकीर्ण सीमा उनके कृत्यों को कम करती है, और कांटों के साथ उनकी उपलब्धियों के बारे में बचाव करती है।

नश्वर मन जीवन और आनंद की गलत, भौतिक अवधारणा को स्वीकार करता है, लेकिन सच्चा विचार अमर पक्ष से प्राप्त होता है। कठिन परिश्रम, संघर्ष और दु:ख के माध्यम से, मनुष्य क्या प्राप्त करते हैं? वे नाशवान जीवन और खुशी में अपना विश्वास छोड़ देते हैं; मृत्यु और सामग्री धूल में लौट आती है, और अमर हो जाता है।

4. 183 : 16-25

अस्थायी कानून, जिसके परिणामस्वरूप परेशानी और बीमारी होती है, उनके कानून नहीं हैं, सत्य के वैध और एकमात्र संभव कार्य के लिए सद्भाव का उत्पादन है। प्रकृति के नियम आत्मा के नियम हैं; लेकिन नश्वर आमतौर पर कानून के रूप में पहचानते हैं जो आत्मा की शक्ति को छुपाता है। डिवाइन माइंड सही ढंग से मनुष्य की संपूर्ण आज्ञाकारिता, स्नेह और शक्ति की माँग करता है। किसी भी कम निष्ठा के लिए कोई आरक्षण नहीं किया जाता है। सत्य का पालन मनुष्य को शक्ति और सामर्थ्य देता है। त्रुटि के अधीन होने से शक्ति का नुकसान होता है।

5. 537 : 9-10

बुराई का ज्ञान कभी भी देवत्व या पुरुषत्व का सार नहीं था।

6. 102 : 30-31

मानव जाति को सीखना चाहिए कि बुराई शक्ति नहीं है। इसकी तथाकथित निरंकुशता है, लेकिन कुछ भी नहीं है।

7. 103 : 18-24, 29-2

जैसा कि क्राइस्टियन साइंस में नाम दिया गया है, पशु चुंबकत्व या हिप्नोटिज्म त्रुटि, या नश्वर मन के लिए विशिष्ट शब्द है। यह गलत धारणा है कि मन पदार्थ में है, और यह बुराई और अच्छा दोनों है; यह बुराई उतनी ही वास्तविक है जितनी अच्छी और अधिक शक्तिशाली। इस विश्वास में सत्य का एक गुण नहीं है। यह या तो अज्ञानी है या दुर्भावनापूर्ण।

वास्तव में कोई नश्वर मन नहीं है, और परिणामस्वरूप नश्वर विचार और इच्छा-शक्ति का कोई संक्रमण नहीं है। जीवन और अस्तित्व ईश्वर के हैं। क्राइस्टियन साइंस में, मनुष्य कोई नुकसान नहीं कर सकता, क्योंकि वैज्ञानिक विचार सच्चे विचार हैं, भगवान से मनुष्य के लिए गुजर रहे हैं।

8. 104 : 13-18

क्रिश्चियन साइंस मानसिक क्रिया के तह तक जाता है, और उस थोडीसी को प्रकट करता है, जो सभी दिव्य क्रियाओं के सही होने का संकेत देता है, जैसा कि ईश्वरीय मन की मुक्ति है, और इसके विपरीत तथाकथित गलत क्रिया के कारण, — बुराई, मनोगतवाद, काला जादू, मंत्रमुग्धता, पशु चुंबकत्व, सम्मोहन।

9. 72 : 9 (जैसा)-12, 21-32

जैसे-जैसे प्रकाश अंधकार को नष्ट करता है और अंधकार के स्थान पर सब प्रकाश हो जाता है, वैसे ही (परम विज्ञान में) आत्मा, या ईश्वर, मनुष्य के लिए एकमात्र सत्य-दाता है।

ईश्वर, अच्छा, वर्तमान में, यह ईश्वरीय तर्क में अनुसरण करता है कि बुराई, अच्छे के विपरीत, कभी मौजूद नहीं है। विज्ञान में, ईश्वर से प्राप्त व्यक्तिगत अच्छा, अनंत सभी में, दिवंगत से नश्वर तक प्रवाहित हो सकता है; लेकिन बुराई न तो संचारी है और न ही वैज्ञानिक। एक पापी, सांसारिक नश्वर जीवन की वास्तविकता नहीं है और न ही वह माध्यम जिससे सत्य पृथ्वी पर पहुंचता है। संभोग का आनंद पाप का घमंड बन जाता है, जब बुराई और दुख का संचार होता है। व्यक्तिगत अंतर्संबंध नहीं बल्कि ईश्वरीय कानून सत्य, स्वास्थ्य और पृथ्वी और मानवता के सामंजस्य का संचारक है।

10. 73 : 8-14

यह विश्वास कि एक व्यक्ति, आत्मा के रूप में, दूसरे व्यक्ति को नियंत्रित कर सकता है, जैसा कि मामला है, व्यक्ति और व्यक्ति विज्ञान दोनों को परिभाषित करता है, क्योंकि मनुष्य छवि है। ईश्वर मनुष्य को नियंत्रित करता है, और ईश्वर ही आत्मा है। तथाकथित आत्मा का कोई अन्य नियंत्रण या आकर्षण एक नश्वर विश्वास है, जिसे अपने फल से जाना जाना चाहिए - बुराई की पुनरावृत्ति।

11. 74 : 29-32

क्राइस्टियन साइंस में कभी भी प्रतिगामी कदम नहीं होता है, कभी भी आगे बढ़ने वाले पदों पर वापसी नहीं होती है। तथाकथित मृत और जीवित एक साथ कम्यून नहीं कर सकते हैं, क्योंकि वे अस्तित्व, या चेतना के अलग-अलग राज्यों में हैं।

12. 82 : 31-9

शक्ति के अधिक से अधिक विकास के लिए पाप और कामुकता की दुनिया में, यह बुद्धिमानी से विचार करना है कि क्या यह मानव मन है या दिव्य मन है जो एक को प्रभावित कर रहा है। यहोवा के नबियों ने जो किया, बाल के उपासक करने में असफल रहे; लेकिन धोखे और भ्रम ने दावा किया कि वे ज्ञान के कार्य के बराबर हो सकते हैं।

विज्ञान केवल अविश्वसनीय अच्छे और बुरे तत्वों की व्याख्या कर सकता है जो अब प्रकट हो रहे हैं। इन बाद के दिनों की त्रुटि से बचने के लिए मनुष्यों को सत्य की शरण लेनी चाहिए।

13. 96 : 12-15, 21-23

यह भौतिक दुनिया अब भी परस्पर विरोधी ताकतों के लिए अखाड़ा बन रही है। एक तरफ कलह और निराशा होगी; दूसरी तरफ विज्ञान और शांति होगी।

नश्वर त्रुटि एक नैतिक रासायनिककरण में गायब हो जाएगी। यह मानसिक किण्वन शुरू हो गया है, और जब तक विश्वास उपज की सभी त्रुटियों को समझने तक जारी रहेगा।

14. 97 : 5-25

वास्तव में, अधिक निकट त्रुटि सच्चाई का अनुकरण करती है और तथाकथित मामला अपने सार, नश्वर मन जैसा दिखता है, उतना ही नपुंसक त्रुटि विश्वास के रूप में बन जाता है। मानव की मान्यता के अनुसार, बिजली भयंकर है और बिजली का प्रवाह तेज है, फिर भी क्राइस्टचियन साइंस में एक की उड़ान और दूसरे का झटका हानिरहित हो जाएगा। जितना विनाशकारी मामला बनेगा, उतनी ही उसकी निष्पक्षता दिखाई देगी, जब तक कि वह भ्रम में अपने नश्वर क्षेत्र तक नहीं पहुंचता है और हमेशा के लिए गायब हो जाता है। निकटस्थ विश्वास एक ऐसी सच्चाई से गुज़रता है, जो बिना सीमा के गुज़रती है, जहाँ परमात्मा प्रेम से नष्ट हो जाता है, यह भ्रम होना भी बंद कर देता है, यह विनाश के लिए बनने वाला दुस्साहस है। यह विश्वास जितना अधिक भौतिक है, उतनी ही स्पष्ट इसकी त्रुटि है, जब तक कि दिव्य आत्मा, अपने क्षेत्र में सर्वोच्च नहीं है, सभी मामलों पर हावी है, और मनुष्य आत्मा, उसके मूल होने की समानता में पाया जाता है।

व्यापक तथ्यों में खुद के खिलाफ सबसे अधिक गलतियाँ हैं, क्योंकि वे कवर के तहत त्रुटि लाते हैं। सत्य बोलने के लिए साहस चाहिए; क्योंकि जितनी अधिक शनि अपनी आवाज उठाएगा, संभावना उतनी ही जोर से चिल्लाएगी, जब तक कि इसकी पूर्व ध्वनि हमेशा के लिए तिरनामी में चुप नहीं जाए।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6